सिन्धुकालीन स्थापत्य की विशेषताएँ

drishtiias.com/hindi/printpdf/sindhukalin-sthapatya

सिंधुकालीन स्थापत्य की विशेषताएँ

परिचय

- 'वास्तु' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द वस से हुई है, जिसका आशय बसने या रहने से है। 'स्थापत्य' शब्द वास्तु का पर्यायवाची है। कला की भाँति 'वास्तु या स्थापत्य कला' के उद्भव एवं विकास का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है, जितना की मानव सभ्यता का।
- हड़प्पा सभ्यता भारतीय संस्कृति की लंबी एवं वैविध्यपूर्ण कहानी का प्रारंभिक बिंदु है।
- इसका कालखंड लगभग 3000 ई.पू. से 2000 ई.पू. के बीच है।
- भारतीय वास्तुकला के प्राचीनतम नमूने हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, कालीबंगन, लोथल और रंगपुर आदि से पाए गए हैं।

सिंधुकालीन स्थापत्य की विशेषताएँ

- हड़प्पाई नगर 'ग्रिड पैटर्न' के तहत बनाए गए हैं अर्थात् आयताकार खंड में विभाजित नगर, जहाँ सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं।
- विशाल सड़कें नगर को अनेक खंडों में विभाजित करती थीं जबकि छोटी सड़कों का उपयोग अलग-अलग स्थानों पर स्थित घरों और बहुमंजिली इमारतों को जोड़ने के लिये किया गया था।
- उत्खनन स्थल पर मुख्यतः तीन प्रकार के भवन पाए गए हैं– सार्वजनिक भवन और सार्वजनिक स्नानागार तथा निवास गृह।
- भवन निर्माण के लिये हड़प्पा के लोग मानकीकृत आयाम वाली पक्की ईंटों का उपयोग करते थे।
- ईंटों को जिप्सम के गारे का उपयोग करके एक साथ जोड़ा जाता था।
- नगरीय क्षेत्र दो हिस्सों में बँटा था– गढ़ी क्षेत्र अर्थात् पश्चिमी टीला तथा पूर्वी टीला या निचला नगर।
- पश्चिमी भाग में ऊँचाई पर स्थित गढ़ी का उपयोग विशाल आयामों वाले भवनों, जैसे– अन्नागार, प्रशासनिक भवन, स्तंभों वाला हॉल और आँगन आदि के लिये किया जाता था।
- गढ़ी में स्थित कुछ भवन संभवतः शासकों और अभिजात वर्गों के आवास थे।
- अन्नागार वायु संचार वाहिकाओं और ऊँचे चबूतरों के साथ निर्मित किये गए हैं। इससे अनाज भंडारण में मदद के साथ ही कीटों से उनकी रक्षा करने में भी सहायता मिलती थी।
- हड़प्पाई नगरों की एक प्रमुख विशेषता सार्वजनिक स्नानागारों का प्रचलन था। इससे उनकी संस्कृति में कर्मकांडीय पवित्रता के महत्त्व का संकेत मिलता है।
- इन स्नानागारों के चारों ओर दीर्घाओं और कक्षों का समूह था। सार्वजनिक स्नानागारों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण मोहनजोदड़ो के उत्खनित अवशेषों में 'वृहत स्नानागार' है। इसमें किसी दरार या रिसाव का न होना हड़प्पा सभ्यता की अभियांत्रिकी कुशाग्रता का परिचायक है।
- नगर के निचले भाग में एक कक्षीय छोटे भवन पाए गए हैं। इनका उपयोग संभवतः श्रमिक वर्ग के लोगों द्वारा आवास के लिये किया जाता था।
- कुछ घरों में सीढ़ियाँ भी थीं जिससे संकेत मिलता है कि संभवतः कुछ भवन दो मंजिला रहे होंगे।
- अधिकांश भवनों में कुएँ तथा स्नानागृह थे और वायु संचार की उचित व्यवस्था थी।
- हड़प्पाई स्थापत्य की प्रमुख विशेषता, 'उन्नत जल निकास' व्यवस्था थी।
- प्रत्येक घर से निकलने वाली छोटी नालियाँ मुख्य सड़क के साथ-साथ चलने वाली बड़ी नालियों से जुड़ी थीं।
- नियमित साफ-सफाई और रख-रखाव के लिये नालियों को आंशिक रूप से ढका गया था।
- उचित दूरी पर मलकुंड (सिसपिट) बनाए गए थे।
- व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों प्रकार की स्वच्छता पर ध्यान दिया गया था। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता पहली सभ्यता थी जहाँ स्वच्छता को प्राथमिकता दी गई।